International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063 Impact Factor : 3.4052 (UIF)
Volume - 4 | Issue - 11 | May - 2015 Available online at www.isrj.org

कलर्स चैनल पर प्रसारित धारावाहिकों स्त्री छवि

मु.दानिश खान
एम.फिल शोधार्थी , मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय ,हैदराबाद.

Short Profile :
Danish Khan is a M.Phil., Research Scholar at Maulana Azad National Urdu College, Hyderabad. He has completed B.A., M.A., M.Phil.(pursuing).

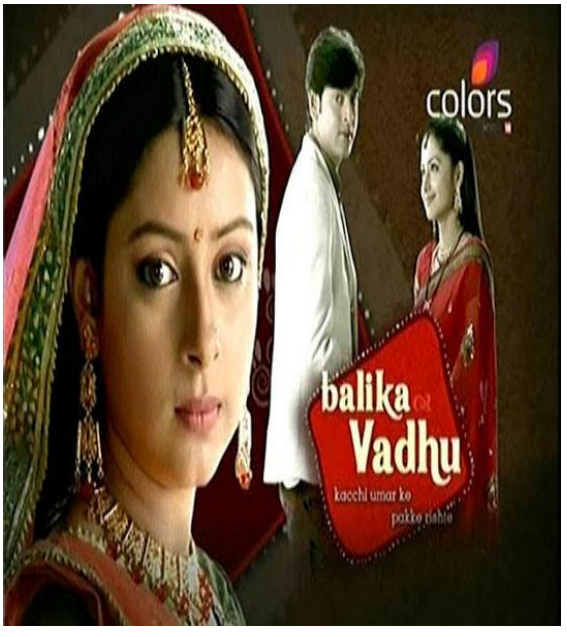

सारांश :
आज समाज में घर-घर टीवी सीरियल की पहुँच है. जिसकी वजह से महिलाओं पर उसका असर देखा जाता है. इस शोध का मकसद टीवी सीरियल के ज़रिये महिलाओं पर होने वाले प्रभाव का जायजा लेना है. इस शोध में कलर्स चैनल पर दिखाए जाने वाले सीरियल का विश्लेषण किया जायेगा और इसमें प्राइमरी और सेकेंडरी डाटा का इस्तेमाल किया जायेगा इसके साथ ही डाटा कलेक्शन के लिए सर्वे मेथड का इस्तेमाल होगा. **Hypothesis:-** सामाजिक शोध में hypothesis की भूमिका मानवीय शरीर के रीढ़ की हड्डी के समान है. वास्तविकता यह है कि hypothesis ही शोधकर्ता को उसके शोध के काम में एक मार्ग के रूप में नेतृत्व करता है जो शोध करने वाले के लिए अत्यंत आवश्यक होता है. बिना hypothesis शोध वैसे है जैसे हवा में तीर चलाना. hypothesis शोध करता का काल्पनिक विचार होता है, जो उसके शोध को सही तरीके से करने में मुख्य भूमिका निभाता है. इस शोध के कुछ hypothesis इस प्रकार हैं-

1. महिलाओं की सामाजिक भूमिका में काफी बेहतरी आई है. मगर आज भी बड़े हद तक महिलाएं सामाजिक लिंग-भेद का शिकार हैं.
2. सीरियल में महिलाओं की भूमिका गलत और असभ्य है.
3. कलर्स चैनल पर दिखाए जाने वाले टीवी सीरियल में महिलाओं की मुख्य भूमिका होती है.
4. टीवी सीरियल में महिलाओं की मुख्य भूमिका होने से महिलाओं में सशक्तिकरण आता है.
5. हिंदी टीवी सीरियल महिलाओं की वास्तविक परेशानियों को दिखाता है.

Article Indexed in :
DOAJ Google Scholar DRJI
BASE EBSCO Open J-Gate

Objective- इस शोध के कुछ मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं-

1. महिलाओं के टीवी सीरियल के बारे में उनके दृष्टिकोण को जानना.
2. टीवी सीरियल में महिलाओं की प्रस्तुतीकरण का विश्लेषीकरण करना है.
3. टीवी सीरियल में महिलाओं की मुख्य भूमिका का निरीक्षण करना है.
4. भारतीय टीवी सीरियल के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण का निरीक्षण करना है.
5. सीरियल से महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का निरीक्षण करना है.

Methodology- इस शोध में non-probality sampling के purposive sampling का प्रयोग होगा-

1. इस शोध में content analysis किया जायेगा.
2. इस शोध में servey method का प्रयोग होगा.

प्रस्तावना :

आज के साइंस और टेक्नोलॉजी के इस दौर में देश के बुद्धिजीवी और शोध- कर्ता तमाम क्षेत्र में महिलाओं की बेहतर नुमाइंदगी चाहते हैं. देश और राज्य के क़ानून बनाने वाले संस्था आये दिन महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए नए-नए एक्ट ला रहे हैं और नए-नए तर्क दे रहे हैं. लेकिन हमारी मीडिया महिलाओं के सम्बन्ध से तफरीह का शिकार हैं. आज़ादी के नाम पर या तो उसे बाज़ारू वस्तु बना देता है या फिर रस्मो-रिवाज के नाम पर स्टीरियो टाइप चिन्हित करने की कोशिश करता है और इस तफरीह का सबसे ज्यादा शिकार भारतीय टीवी धारावाहिक हैं. ये और बात है कि भारत में टीवी सीरिअल्स अपनी शुरुआत से ही महिलाओं में लोकप्रिय रहा है. वैसे तो भारत में टीवी की शुरुआत 1959 में हुई लेकिन पहला टीवी सीरियल (हम लोग) 1984-85 में आरम्भ हुआ. इस सीरियल का 156 एपिसोड दूरदर्शन पर दिखाया गया. इस सीरियल की मुख्य पृष्ठभूमि जनसँख्या पर नियंत्रण और परिवार नियोजन था.

इसके बाद फिर 'बुनियाद' नाम से दूसरा सरियल शुरू हुआ. उस समय सभी सीरियल दूरदर्शन पर दिखाए जा रहे थे. क्यूंकि 1990 तक देश में सैटलाइट चैनेल नहीं आया था. सैटलाइट टीवी के आने के साथ ही टीवी में निजीकरण को बढ़ावा मिला और प्राइवेट टीवी चैनल का नियंत्रण होने लगा. इसके बाद तो प्राइवेट टीवी चैनल बढ़ते गए और प्राइवेट टीवी चैनल 21 जुलाई 2008 को इस सूची में सम्मिलित हुआ. कलर्स चैनल के नाम से ये एक मनोरंजक चैनल है और यह चैनल सीरियल के लिए बहुत ही लोकप्रिय है. इसके सीरियल में महिलाओं को मुख्य भूमिका में दिखाया जाता है और इसके सीरियल की महत्वपूर्ण बात ये है कि ये महिला सशक्तिकरण पर अधिक बल देता है. इसके कुछ मुख्य और लोकप्रिय सीरियल हैं- **बालिका वधु, मेरी आशिकी तुम से है, उड़ान, सीमर का ससुराल, कोड़े रेड, तलाश,शास्त्री सिस्टर,चार दिल एक धड़कन, जुड़े रिस्तो के सुर,चक्रवर्ती अशोक सम्राट,** आदि. वर्तमान समाज में महिलाओं का शोषण हो रहा है इसको दूर करने के लिए महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया जा रहा है. चाहे वह फिल्म के माध्यम हो या फिर सीरियल के. देश की तत्कालीन सरकार ने 90 के दशक के आरम्भ में ही देश में बुरे दौर से गुज़र रही महिलाओं की ज़िन्दगी और सामाजिक अस्मिता बेहतर बदलाव के लिए 'जोशी कमेटी' बनायीं गयी थी. जिसका उद्देश्य महिलाओं की ज़िन्दगी में बेहतरी लाना और उसे सशक्त बनाने के लिए सुझाव देना था.

सन 1984 ई. में जोशी कमेटी ने अपनी रिपोर्ट सौंपते हुए ये सिफारिश की कि टीवी चैनलों पर दिखाए जाने वाले तमाम प्रोग्रामों में महिलाओं के पहलूओं को ध्यान में रखते हुए उसे मुख्य पात्र में प्रस्तुत किया जाये. इस वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता कि इस सिफारिश के बाद महिलाओं को मुख्य पात्र की भूमिका में दिखाया जाने लगा.

सीरियल क्या है:-टेलिविजन पर दिखाए जाने वाले प्रोग्राम में सब से अधिक प्रतिशत सीरियल का होता है चाहे वह कोई चैनल हो इसकी सबसे बड़ी वजह दर्शको कि अधिक संख्या होती है जिन में बच्चे, बूढ़े, नोजवान, और विषेस कर महिलाये सीरियल को सब से अधिक पसंद करती है लेकिन अक्सर दर्शक इस बात से अपरचित होते है कि वह जो कुछ देख रहे है वह टीवी ड्रामा है,या सीरियल है,सिरीज है,या सोप ओपेरा है ,सीरियल कई भागो पर बटे ड्रामे को कहा जाता है सीरियल के दो शक्लें है सीरिज और सोप ओपेरा काहेलाता है ये तीनो ज़ाहिरी तौर पर मिलते जुलती है लेकिन अपना अलग-अलग रंग और अलग पहचान रखते है सीरियल आम तौर पर सप्ताह में दो,तीन या फिर प्रत्येक दिन भी दिखाए जाते है पहचान के लिए हर सीरियल कि शुरुआत चिन्हित और विकास है और सोप ओपेरा लचकदार होता है सीरियल का न तो शुरुआत तय होता है और न ही समाप्ति तय होती है इसके अलावा सोप ओपेरा कि रफ़्तार धीमी होती है जबकि सीरियल तेज रफ़्तार और अमल से भरपूर होता है सीरियल के हिस्से कि संख्या तय होती है जबकि सोप ओपेरा कि संख्या तय नही होती है ये बहुत ज्यादा भी चल सकता है और अचानक ख़त्म भी हो सकता है सीरियल और सोप ओपेरा कि बहुत सारी खुबिया है जेसे सोप ओपेरा के विषय सीरियस होता है और सीरियल सीरियस या मनोरंजक, किसी भी विषय पर हो सकता है सीरिज कहानियो का एक एसा सिलसिला होता है जिस के हर भाग में एक नई कहानी होती है और इसके मुख्य किरदार और दूसरे कई किरदार पहले भाग में कायम हो जाते है और वह हर भाग में दिखाए जाते है और दर्शको के लिए वह जाने पहचाने होते है और हर भाग में इन का किरदार मुख्य होता है जिस के आसपास कहानी घुमती रहती है और ये कहानी को आगे बढ़ाने में मदद करते है नए किरदार भी कुछ भाग में मुख्य होते है और दर्शको को यह यकींन होता है के हर सप्ताह एक नई कहानी देखने को मिलेगी प्रसिद्ध और जाने पहचाने कलाकारों के साथ एक कहानी हर सप्ताह ज्यादा दिलचस्पी पैदा कर सकती है और अगर सीरियल का अंत सही हो तो अयसे सीरिज कई सप्ताह तक दिखाए जाने उम्मीद कि जा सकती है सीरिज का हर भाग पूरण होता है अगर दर्शको से एक या दो भाग छुट भी जाये तो कोई बात नही क्योकि इस में दिलचस्पी बनी रहती है सीरियल के भाग कहानी और किरदारो के जरिये एक दूसरे से मिले होते है सभी भागो में मुख्य किरदार होते ही है इन कि कहानी भी एक ही किरदार के आस पास घुमती है ऐसे सीरियल का हर भाग अपनी जगह पूर्ण होने के बाद भी दूसरे भाग से जुडा होता है और उस पर डिपेंड होता है एयसे सीरियल के उदाहरण है **मिर्ज़ा ग़ालिब,आमिर खुसरो,बहादुर शाह जफर,दिल दरिया,महाभारत,रामायण,टीपू सुल्तान,दी ग्रेट मराठा,हवाए,मै बनुगी मिस इंडिया,कहानी घर घर कि,मैहर,कसोटी ज़िन्दगी कि,क्यो कि सास भी कभी बहु थी,विरासत,नवाब सराजुदोला,केसा ये प्यार है,पराई धन,एक लड़की अनजानी सी,** और इसी प्रकार के कई सीरियल जो अलग अलग चनेलो पर दिखाया जाता है सीरियल बनाते समय इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि ये सीरियल किस किसम के दर्शको के लिए बनाया जा रहा है सीरियल बनाते समय एसे विषय को चुनना चाहिए कि जो दर्शको का मनोरंजन कराये और इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि वह मनोरंजन किस तबके को करना है बच्चे को,बुढो को, महिलाओ को,या फिर मजदुर तबके को अगर ये बात तय हो जाती है तो लेखक को स्क्रिप्ट लिखने समय किरदार को उसी हिसाब से लिखता है जो मजबूत किरदार हो और सीरियल के हर हिस्से में नज़र आये और कहानी को आगे बढ़ाने में मदद करे